

... जयमलजी पक्ष हथाला (ब्रह्महर्षा अष्टाया) ...

अब सबसे पहले किले की इस खंडित प्राचीर का पुनर्निर्माण करना बेहद जरूरी था। इसलिए रात्री में ही जयमलजी की देख-रेख में जलती हुई मशालों की लाल रोशनी के बीच मरम्मत कार्य प्रारम्भ कर दिया। उधर मुगल छावनी से इस क्षत-विक्षत प्राचीर को वापस खड़ी होती देखकर सम्राट अकबर चिन्तित हो गया। उसे लगा कि किले में प्रवेश का यह रास्ता अगर फिर से बन्द हो गया तो वह किसी भी परिस्थिति में बितोड़ विजय का अपना ख्याब पूरा नहीं कर पायेगा।

यही सोचकर दिल्ली सल्तनत के महान सम्राट अकबर ने रात्री के अँधेरे में षडयंत्र रचकर इस युद्ध विराम के समय में सेनापति जयमल राठोड़ पर अपनी बन्दूक से हमला कर दिया। इस अप्रत्याशित आक्रमण से जयमलजी की दोनों जांघें जखमी हो गईं और अब वे चलने-फिरने में भी समर्थ नहीं थे।

... जोहड़ उवाला (अठारहवाँ अष्टाया) ...

इस घटना से बितोड़ की सेना में भय व्याप्त हो गया कि अब मुगलों की फौज इस क्षतिग्रस्त दीवार से किसी भी वक्त किले में प्रवेश कर सकती है। इसलिए इस अन्तिम युद्ध से पहले राजपुत योद्धाओं ने अपने सेना प्रमुख जयमल, पता व कन्नौजी से जोहर के विषय में आपसी मंत्रणा के लिए बैठक रखी। जिसमें सभी के सुझावों पर चिंतन-मनन के बाद जयमलजी ने जोहर की रसीकृति प्रदान कर दी। अब किले के भीतर इस हेतु तैयारियाँ होने लगी।

अन्तिम मिलन की इस घड़ी में परिवार के लोग आज बोझिल एवं व्यथित हृदय से आपस में गले मिल रहे थे। इस कारुणिक दृश्य के बीच राजमहल के प्रांगण में चन्दन की धिता प्रज्वलित की गई। मेवाड़ की माताएँ एवं साहसी वीरगणाएँ सौलह श्रृंगार के साथ अपने प्रियतम के अंतिम दर्शन कर उनकी वरण रत्न अपने मस्तक पर लगाकर गमगीन गले से शहादत के गीत गाते हुए अग्नि कुण्ड की ओर आगे बढ़ रही थी। चारों तरफ हर-हर महादेव, जयश्री एक शिखनाथ तथा जय जगदम्ब के उद्घोष गुंज रहे थे और ऐसे में वीर क्षत्राणियाँ अपनी नश्वर देह का मोह त्यागकर स्वयं को जोहर की ज्वाला में समर्पित करती जा रही थी।

... कमधज कल्याण (एक्रीषवाँ अष्ट्याय) ...

तभी उनको ख्याल हुआ कि उन्होंने तो रणक्षेत्र में पीछे मुड़कर नहीं देखने के लिए अपनी मातेश्वरी को वचन दिया था, जो क्रोध की ज्वाला में खंडित हो चुका है। अब कल्लाजी माँ का स्मरण करते हुए अपनी इस भूल के प्रायश्चित्त स्वरूप सोचने लगे कि निश्चित रूप से अब मेरी मृत्यु अवश्यभावी है। फिर मैं अपने इस शरीर को दुष्ट मुगलों के हाथों क्यों भ्रष्ट करूँ ? इस पवित्र विचार के साथ उन्होंने राजराजेश्वरी का आह्वान किया कि " है माँ, आपकी अमानत एवं धरोहर रुपी यह काया अब आपको ही समर्पित है। "

उनकी यह श्रद्धावाणी सुनकर जगद्जननी जगदम्बा साक्षात् दर्शन देती है। तभी वीरवर कल्ला राठोड पूर्ण भक्तिभाव के साथ अपने ही हाथों से अपना शीर्ष काटकर माँ के चरणों में भेंट कर देते हैं। बेटे की इस बलिदानी भावना से द्रवित मातेश्वरी उनको आशीर्वाद देती है कि अब तुम केवल अपने इस धड (कबन्ध) के सहारे भी यदि दुश्मनों का दमन करना चाहें तो आखिरी साँस तक तुम्हें अपनी छाती से नेत्रज्योति की प्राप्ति होती रहेगी। तत्पश्चात् माँ के इस वरदान से अभिभूत जोश और जुनून की ज्वाला से लबरेज कमधज रुपी कल्याण ने सेकड़ों शत्रुओं को मौत के घाट उतार दिया।

मुगल सैनिक शीघ्रविहीन धड को लडता देखकर युद्ध करना भी भूल गये तथा जिस दिशा में भी यह रुण्ड अगे बढ़ता, उधर शत्रु सिपाही आश्चर्यजनक रूप से भयाक्रान्त हो भाग खड़े होते। कुँवर कल्ला राठोड का यह अद्वितीय ऐतिहासिक रूप देखकर युद्ध के इस मेदान में भीषणतम हाहाकार हो गया। अकस्मात् ही कल्लाजी को अपनी पटरानी से किया आखिरी वादा याद आ गया और उसी क्षण वे रक्तरंजित कंक कबन्ध (कमधज कल्ला) के रूप में शिवागढ की तरफ रवाना हो गये।

... प्रेम की उठाव पर (बार्ड्रिषवाँ अष्ट्याय) ...

उधर कृष्णाजी को भी स्वप्न में ही अपने प्राणनाथ के आगमन का समाचार मिल गया। इसलिए वे भी तत्काल ही अपनी दासी चम्पाबाई के साथ जल व वरमाला लेकर जंगल की तरफ निकल पड़ी। कुछ देर बाद कल्लाजी का यह प्यासाकुल धड शिवागढ की राह पर एक खेजडी के वृक्ष तलें शीतल छांव में विश्राम के लिए रुक गया। इस कारुणिक क्षण में खेजडी का भी हृदय पसीज गया और उसने प्राकृतिक कृपा दृष्टि से उस प्यासे धड पर पानी बरसाया। (इसलिए ऐसी मान्यता है कि कोई भी श्रद्धालु यदि इक्कीस रविवार तक लगातार खेजडी के पेड़ को पानी पिलाता है तो वह कदापि जलसंकट से दुखी नहीं होगा।)

तभी कृष्णाजी भी उस खेजडी के निकट पहुँच गई और खुद अपने हाथों से प्रियवर के इस व्याकुल गट को जल अर्पित किया। जिसे ग्रहण कर तृप्त कमधज कल्ला राठोड का यह रुण्ड बृहत्तीन हो गया। (जहाँ पर यह रुण्ड गीरा था वह जगह पहले किसी घने जंगल से कम नहीं थी। लेकिन इस पराक्रमी देव पुरुष के प्रभाव से शनै-शनै यहाँ पर एक गाँव की बस्ती आबाद हो गई। जो उस समय कल्लाजी का रुण्ड गीरने की वजह से रुण्डपुर के नाम से परिचित थी। धीरे-धीरे अपभ्रंश होकर यह गाँव रुण्डेला हो गया और वर्तमान में इसे रनेला के नाम से जाना जाता है।)

अब कृष्णाकुँवर बारम्बार अपने पति के वियोग का विलाप करने लगी तथा अपनी स्मृतियों को, यादों को और गुजरें हुए लम्हों को याद कर-कर के वो जार-जोर से रोने लगी। फिर इसी अश्रुधारा के बीच उन्होंने कल्लाजी के साथ ही सति होने का निर्णय लिया। लेकिन सतित्व के हवनकुण्ड में अपने पति के साथ सति होने पर रुण्ड के साथ मुण्ड का होना भी जरूरी है। इसलिए अपने सम्मुख भीहीन धड को देखकर वह फूट-फूट कर रोने लगी और रुंधे गले से माँ से अपने पति के शीघ्र हेतु याचना व प्रार्थना करने लगी।

... कृष्णा कल्याण (तेईसवाँ अध्याय) ...

इस कारुणिक प्रसंग पर ममतामहि माँ का दिल भी पसीज गया और राजराजेश्वरी की असीम कृपादृष्टि से कृष्णाजी को दिव्य ज्योति का आभास होने लगा। फलस्वरूप उन्होंने रणक्षेत्र में कल्लाजी के श्रीमुख के दर्शन किये और अपने सुहाग के प्रति कृष्णाजी की इस अदम्य आस्था को देखकर मातेश्वरी के प्रभाव से यह मुण्ड स्वतः कृष्णाकुँवर को प्राप्त हो गया।

अब कृष्णाकुँवर के भीतर सत की ज्वाला धधक उठी है। सब की सरहद पार हो चुकी है। उनका रोम-रोम अपने देवता की आग में आहुत होने के लिए उत्साहित हो रहा है। इसलिए कृष्णाकुँवर भी अपने हाथ में तलवार उठाकर एक वीरगना का वेशधारण करती है। उसके बाद कल्लाजी के शरीर पर लगे चौबीस घावों को देखकर वे अपने शरीर की भी चौबीस आहुतियाँ अग्निकुण्ड में अर्पित करती हैं और इस प्रकार से कृष्णा-कल्याण की यह गौरव गाथा एकाकार होकर इतिहास के सुनहरे पन्नों पर अंकित हो गई।

... जीवत दर्शित (चौर्द्धर्षवाँ अष्टयात्) ...

तदुपरान्त कमधज कल्ला राठोड विक्रमी संवत् १६२४ में अपनी अलौकिक दिव्य शक्ति के बूते शेषनाग की योनि में अवतरित होकर पवनपुत्र के रूप में प्रतिष्ठित हुए। परिणाम स्वरूप आज इस घोर कलयुग में दुःखी और पीडित प्राणियों के मानसिक, दैविक, शारीरिक व प्राकृतिक कष्टों का हरण तथा निवारण करने के उद्देश्य से वे अपने श्रद्धावान सेवकों के शरीर में पवनवेग (भावरूप) में प्रविष्ट होकर सम्पूर्ण सृष्टि में सुख, शान्ति व समृद्धि प्रदान कर रहे हैं। शिवशक्ति के प्रतिक श्री कमधज कल्ला राठोड अपनी तलवार की धार से दीन-दुखियों एवं रोगियों की तमाम बाधाओं को दूर करते हैं।

इनके आशीर्वाद से जहाँ पुत्रविहीन माताओं को सन्तान सुख प्राप्त होता है। वही पागलपन, सर्पदंश, मनोविकार, भूत-पिशाच एवं लकवे के कुप्रभाव सहित अन्य कोई असाध्य रोगों का उपचार भी बड़ी ही सहजता व सरलता से शुरू हो जाता है। कभी-कभी वे अपनी शक्ति (तलवार) के माध्य से मरीज का ऑपरेशन कर भीतर से रोग अथवा गांठ को इस प्रकार से बाहर निकाल फेंकते हैं कि उसे देखकर अच्छे से अच्छा शल्य चिकित्सक भी दाँतों तले अंगुली दबाने को मजबूर हो जाता है।

इनके उपचार की विशेषता यह है कि आधुनिक सर्व सुविधा सम्पन्न अस्पतालों में भी रोगी को इलाज या ऑपरेशन के पश्चात कुछ दिनों के लिए बिना आराम करना जरूरी होता है तथा उस ऑपरेशन का घाव भी कई दिनों तक ठीक नहीं हो पाता है। जबकि कल्लाजी की कृपादृष्टि से रोगी रोग मुक्त होकर पल भर में पूर्णतया सामान्य स्थिति में चलना-फिरना भी कर लेता है। संक्षिप्त में यही कहा जा सकता है कि मालिक के दरबार में निःस्वार्थ आस्था के आवरण से स्थित श्रद्धालुओं की तमाम आकांक्षाएँ शत-प्रतिशत सिद्ध होती हैं।

..... आखिर में अपने अलौकिक प्रेम की बलिवेदी पर अपनी धरती माता और समर्पण और शहादत के इस जाँबाज जज्बे को बारम्बार प्रणाम।